नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

डेमोग्राफी बदलाव पर सख्ती समय की मांग

देश की आंतरिक सुरक्षा केवल सीमाओं की रक्षा से सुनिश्चित नहीं होती, बल्कि सामाजिक संतुलन, जनसंख्या संरचना और सांस्कृतिक स्थिरता भी उसकी आधारशिला होती है. इसी संदर्भ में केंद्र सरकार द्वारा सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस पी.पी. नावलेकर की अध्यक्षता में 'हाईपावर डेमोग्राफी कमेटी' का गठन एक दूरदर्शी और आवश्यक कदम माना जाना चाहिए. यह केवल राजनीतिक निर्णय नहीं, बल्कि आने वाले दशकों की राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक स्थिरता को ध्यान में रखकर उठाया गया रणनीतिक कदम है.

पिछले कुछ वर्षों में देश के कई सीमावर्ती राज्यों, विशेषकर पश्चिम बंगाल, असम, झारखंड और पूर्वोत्तर क्षेत्रों में अवैध घुसपैठ, असंतुलित जनसंख्या वृद्धि और संदिग्ध बसावट पैटर्न को लेकर लगातार चिंता व्यक्त की जाती रही है. केंद्र सरकार और सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि यह केवल जनसंख्या का विषय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, रोजगार, संसाधनों और सामाजिक समरसता से जुड़ा गंभीर प्रश्न है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से अपने संबोधन में जिस 'डेमोग्राफी मिशन' की बात कही थी, उसका उद्देश्य भी इसी चुनौती का संस्थागत समाधान खोजना था.

यह महत्वपूर्ण है कि सरकार ने इस संवेदनशील विषय को केवल राजनीतिक बहस तक सीमित न रखकर एक विशेषज्ञ समिति के हवाले किया है. पूर्व न्यायाधीश, प्रशासनिक अधिकारी और सुरक्षा विशेषज्ञों को शामिल कर बनाई गई यह कमेटी घुसपैठ, असामान्य जनसंख्या परिवर्तन, बसावट के पैटर्न और उनके सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का अध्ययन करेगी. साथ ही, यह सीमा प्रबंधन, जनसंख्या स्थिरीकरण, घुसपैठियों की पहचान और निर्वासन की मानक प्रक्रिया जैसे विषयों पर भी सुझाव देगी.

वास्तविकता यह है कि अवैध घुसपैठ का सीधा असर स्थानीय नागरिकों के रोजगार, सरकारी योजनाओं और सामाजिक संरचना पर पड़ता है. सीमावर्ती इलाकों में पहचान और संसाधनों का संकट बढ़ता है. कई बार यह स्थिति कानून-व्यवस्था और सांप्रदायिक तनाव का कारण भी बन जाती है. इसलिए यदि सरकार इस विषय पर ठोस नीति बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही है, तो उसे केवल राजनीतिक चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए.

पश्चिम बंगाल में 'डिटेक्ट, डिलीट और डिपोर्ट' नीति के तहत होल्डिंग सेंटर स्थापित किए जाने और सीमा क्षेत्रों में स्वदेश लौटने वालों की बढ़ती संख्या यह संकेत देती है कि सरकार अब इस मुद्दे पर प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि प्रशासनिक स्तर पर कार्रवाई करना चाहती है. वर्षों से चली आ रही ढिलाई ने समस्या को जटिल बनाया है. अब आवश्यकता है कि कानून के अनुसार पहचान, सत्यापन और निष्पक्ष कार्रवाई की प्रक्रिया को मजबूत किया जाए.

हालांकि, इस पूरी प्रक्रिया में संवैधानिक मर्यादा और मानवीय दृष्टिकोण बनाए रखना भी उतना ही आवश्यक होगा. किसी भी वैध भारतीय नागरिक को भय या असुरक्षा का वातावरण महसूस न हो, यह सरकार की जिम्मेदारी है. कार्रवाई केवल अवैध घुसपैठ और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मामलों तक सीमित रहे, यही लोकतांत्रिक संतुलन की कसौटी होगी.

स्पष्ट है कि डेमोग्राफी बदलाव का प्रश्न आने वाले समय में भारत की राजनीति और सुरक्षा नीति का बड़ा विषय बनने जा रहा है. ऐसे में केंद्र सरकार का यह कदम समस्या को पहचानने, उसका अध्ययन करने और संस्थागत समाधान खोजने की दिशा में एक गंभीर शुरुआत माना जाना चाहिए.

जनजातीय सांस्कृतिक समागम

अस्मिता, आस्था और अस्तित्व का राष्ट्रीय उद्घोष

रंजना चितले
लेखक एवं साहित्यकार

भारत की सांस्कृतिक आत्मा और शक्ति उन समुदायों में जीवित है, जिन्होंने हजारों वर्षों से प्रकृति, परंपरा और सामुदायिक जीवन के संतुलन को अपने आचरण में संजोकर रखा है. यह समुदाय भारतीय संस्कृति, सभ्यता और परंपराओं के निर्माण तथा संवहन का आदि स्वरूप है. 24 मई को इस सनातन संस्कृति का विराट संगम राजधानी दिल्ली के लाल किले परिसर पर जनजातीय सांस्कृतिक समागम के रूप में संपन्न हुआ. यह वृहद आयोजन भारतीय सभ्यता की मूल चेतना के पुनर्जागरण काराष्ट्रीय उद्घोष बन गया. एक अकल्पनीय, अनूठा और अद्भुत समागम,भव्य शोभा यात्राएं और विशाल जनसभा ने नवीन इतिहास रचा. जनजातीय संस्कृति, परंपरा और गौरव से समूचा देश और समाज अभिभूत हुआ.

> आज जब दुनिया अपनी सांस्कृतिक पहचान बचाने के लिए संघर्ष कर रही है, तब भारत का जनजातीय समाज अपनी जीवन पद्धति के माध्यम से संकेत करता है कि विकास का अर्थ अपनी जड़ों से कटना नहीं हो सकता. आधुनिकता तभी सार्थक है, जब वह परंपरा, प्रकृति और सांस्कृतिक संतुलन के साथ आगे बढ़े. तभी पुरातन से नूतन संभव है. जनजातीय सांस्कृतिक समागम एक ऐसे राष्ट्रीय उद्घोष का अवसर है,जो भारत की सांस्कृतिक एकात्मता को प्रदर्शित कर रहा है. इससे यह भी स्पष्ट है कि विविधता विभाजन नहीं, बल्कि सभ्यतागत शक्ति का आधार बनती है. वनवासी कल्याण आश्रम और जनजातीय सुरक्षा मंच के प्रयास से होने वाला यह समागम निश्चित ही जनजातीय अस्मिता, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय एकात्मता के नए अध्याय के रूप में स्मरण किया जाएगा.

भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जन्मजयंती अवसर पर यह महाआयोजन जनजातीय चेतना और सांस्कृतिक अस्मिता का विराट उत्सव बन गया. देश के सभी राज्यों से आने वाली सैकड़ों जनजातियों के लाखों प्रतिनिधियों का एक मंच पर एकत्र होना एक विलक्षण अवसर है. यह समागम उस भारत का प्रतिनिधित्व है जिसने सदियों तक जल, जंगल और जमीन के साथ सहअस्तित्व की जीवन पद्धति को अपनाया और प्रकृति को पूज्य मानकर जीवन जिया. आज जब पूरी दुनिया पर्यावरण संकट, सामाजिक-सांस्कृतिक विघटन से जूझ रही है, तब भारतीय जनजातीय समाज का जीवन दर्शन वैश्विक मानवता के लिए एक वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत करता है. जनजातीय समाज भारत की प्राचीन स्मृतियों, लोकज्ञान और सामुदायिक सभ्यता का जीवंत प्रतिनिधि है.

प्रकृति पूजा, पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, लोकदेवताओं की आराधना और सामूहिक जीवन की परंपरा उनकी सांस्कृतिक संरचना का मूल आधार रही है. रामायण में शबरी की भक्ति, निषादराज की आत्मीयता और महाभारत में एकलव्य का समर्पण यह स्पष्ट करते हैं कि जनजातीय समाज भारतीय सांस्कृतिक धारा का अभिन्न अंग है। भारत की संस्कृति ,स्वाभिमान और स्वायत्तता के लिए जनजातियों ने अभूतपूर्व संघर्ष किया और बलिदान भी दिए. हर विदेशी आक्रमणकारी के विरोध में शस्त्र उठाये।भारत में स्वाधीनता का अंकुर स्वतंत्रता प्रिय जनजातियों के बीच ही अंकुरित हुआ है. जनजातियों के इसी स्वाधीनता संघर्ष को आगे चलकर समूचे देश ने स्वीकारा.

विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध संघर्ष में जनजातीय वीरों के अद्वितीय साहस, शौर्यऔर पराक्रम की लंबी श्रृंखला है. बिरसा मुंडा, सिद्धो-कान्हू, रानी दुर्गावती, टंट्या मामा, राजा शंकर शाह ,रघुनाथ शाह जैसे असंख्य जननायकों ने स्वाधीनता चेतना को जन-जन तक पहुंचाया. इसीलिए अंग्रेजों ने दमन के लिए शिक्षा और सेवा के नाम पर परिवर्तन का अभियान चलाया और उन्हें अपराधी घोषित करने का षड्यंत्र रचा. तमाम अतिरेक और दबाव के बीच जनजातीय समाज ने अपने अस्तित्त्व को बचाए रखा .

एक सामाजिक विसंगति यह भी रही कि लंबे समय तक मुख्यधारा विमर्श में जनजातीय समाज को केवल पिछड़ेपन, गरीबी या विकास की समस्या के रूप में प्रस्तुत किया गया. बदलते परिदृश्य में चुनौतियों से जूझते जनजातीय समाज का सामाजिक संतुलन भी प्रभावित हुआ है. वैश्वीकरण से नई संभावनाओं के साथ सांस्कृतिक विघटन का संकट निर्मित हुआ है. पारंपरिक भाषाएँ, लोकगीत, अनुष्ठान और सामुदायिक मूल्य धीरे-धीरे कमजोर होते दिखाई दे रहे हैं.

यही कारण है कि आज आस्था, अस्मिता और अस्तित्व जनजातीय विमर्श के केंद्रीय विषय हैं. इस परिप्रेक्ष्य में 'जनजातीय सांस्कृतिक समागम महत्वपूर्ण है. यह आयोजन केवल लोकनृत्य, वेशभूषा और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का मंचन मात्र नहीं है, बल्कि अपनी जड़ों से जुड़े रहने के संकल्प और सांस्कृतिक आत्मविश्वास की सार्वजनिक अभिव्यक्ति है. जनजातीय समाज अब अपनी संस्कृति, परंपराओं और जीवन दर्शन की रक्षा के लिए संगठित रूप से आगे बढ़ रहा है. इस समागम में देशभर से आने वाले जनजातीय समुदाय ने अपने पारंपरिक नृत्य, वाद्ययंत्र, लोकगीत, धार्मिक अनुष्ठान और सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रदर्शन किया. यह जनजातीय समाज की जीवंत सभ्यता और संस्कृति की प्रस्तुति है ,वास्तव में जनजातीय जीवन पद्धति यह सिखाती है कि आधुनिक विकास और सांस्कृतिक मूल्यों के बीच संतुलन संभव है.

महाकौशल की डायरी

अपर मिशन संचालक का पत्र बना मुसीबत का सबब...

अविनाश दीक्षित

जबलपुर में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन में 58 लाख रुपए के घोटाले को लेकर अपर मिशन संचालक (राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, मप्र) के कार्यालय से जारी हुआ पत्र यानि नोटिस जबलपुर स्वास्थ्य विभाग के जिम्मेदारों के लिए मुसीबत का सबब बना हुआ है. कभी सोशल मीडिया में वायरल खबर तो कभी बार बार सफाई देने के प्रयास इन दिनों स्वास्थ्य महकमें, प्रशासनिक गलियारों से लेकर मीडिया में सुर्खियां बटोर रहे हैं . हाल ही में सीएमएचओ बने डॉ. नवीन कोठारी विभाग की लुटती अस्मत बचाने जिला अस्पताल विक्टोरिया के पीआरओ के जरिए बार बार ये बताने की कोशिश कर रहे हैं कि जब घोटाला हुआ जब वे नहीं थे और इस घोटाले से उनका कोई लेना देना नहीं है. उनकी बात कहां तक सही है यह वक़्त के गर्भ में छिपा है किन्तु शहर से लेकर भोपाल तक के स्वास्थ्य विभाग के गलियारों ये चर्चाएं तेज हैं कि भ्रष्टाचार की जांच अगर सही ढंग से हो गई तो कई अधिकारी इसमें नप जाएंगे उसके अलावा संजीवनी क्लीनिकों के नाम पर गबन की गई करीब 56.98 लाख की राशि भी रिकवर की जाएगी.

विदित हो कि वर्ष 2025-26 में जबलपुर जिले की 58 संजीवनी क्लीनिकों को नेशनल क्वालिटी एश्योरेंस स्टैंडर्ड यानी एनक्यूएएस के अनुरूप विकसित करने के लिए प्रति संस्था एक लाख रुपए के हिसाब से 58 लाख रुपए आवंटित किए गए थे. इनमें से 56.98 लाख रुपए खर्च भी कर दिए गए, लेकिन राज्य स्तर पर हुई समीक्षा में सामने आया कि जिले की एक भी शहरी स्वास्थ्य संस्था का एनक्यूएएस प्रमाणीकरण नहीं कराया गया. इतना ही नहीं संस्थाओं को मानकों के अनुरूप तैयार भी नहीं किया गया है. जिस दौरान यह सब हो रहा था उस वक्त सीएमएचओ डॉ संजय मिश्रा थे और यही बात अब डॉ नवीन कोठारी बताने की कोशिश करते नजर आ रहे हैं. सवाल ये खड़े हो रहे हैं कि अगर घोटाला हुआ है तो फिर गाज गिरना तय है अब ये गाज उस वक्त के सीएमएचओ पर गिरती है या फिर किसी अन्य पर ये तो आने वाला समय ही बताएगा, लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि घोटाला नहीं हुआ है. इसके साथ ही सवाल ये भी है कि 4 मई को पत्र जारी हुआ तो क्या भोपाल के आला अधिकारियों को नहीं पता था कि जबलपुर के सीएमएचओ बदल गए हैं. कुछ जानकार इस पत्र के शब्दों में प्रशासनिक त्रुटि होना भी मान रहे हैं. गौरतलब है कि सीएमएचओ समेत 4 अधिकारियों को 4 मई को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था. अधिकारियों को 15 दिन में जवाब प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए थे. इसके साथ ही चेतावनी दी गई है कि संतोषजनक जवाब नहीं मिलने पर खर्च की गई राशि संबंधित अधिकारियों से वसूल की जाएगी, लेकिन एक पखवाड़ा से ज्यादा समय गुजरने के बाद भी जवाब अभी तक नहीं दिया गया है.

हमें तो अपनों ने लूटा, गैरों में कहां दम था....

हमें तो अपनों ने लूटा गैरों में कहां दम था, हमारी कश्ती तो वहां डूबी जहां पानी कम था... ये लाइन इन दिनों भारतीय जनता पार्टी के पार्षद व भाजपा के वरिष्ठ नेता महेश सिंह राजपूत के ऊपर बिल्कुल फिट बैठती हुई उस वक्त नजर आई जब खबर वायरल हुई कि भाजपा पार्षद के साथ ही बैठे उनके एक साथी ने पार्षद का बीयर पीते हुए उनका वीडियो गुपचुप बनाकर सोशल मीडिया में वायरल कर दिया. बस फिर क्या था.. सफाई का दौर शुरू हो गया.

तबादला रूकवाने काटने लगे चक्कर...

मध्यप्रदेश की एक मात्र यूनिवर्सिटी नानाजी देशमुख वेटरनरी साइंस में व्यवस्थाओं को सुधारने कुलसचिव या अन्य अधिकारियों को नहीं बल्कि इस बार संबंधित शाखाओं में पिछले कई सालों से जमे कर्मिचारियों को हटाया गया. खबर तो ये भी है कि आने वाले कुछ दिनों में करीब आधा दर्जन ऐसे कर्मचारियों के नाम भी शामिल हैं जो बहुत लापरवाह किस्म के माने जाते हैं. इसी तरह के कर्मी अपनी कमियों को जानते हुए अब आने वाली नई ट्रांसफर लिस्ट को लेकर अधिकारियों के दफ्तरों के चक्कर काटते नजर आ रहे हैं कि कहीं से कुछ सेटिंग फिट बैठ जाए . वजह साफ है कि उनका तबादला कहीं न हो लेकिन विवि प्रशासन के मंसूबे तो हकीकत कुछ और ही बयां करते नजर आ रहे हैं. विवि प्रशासन ट्रांसफर करने के बाद कर्मचारियों को कहां भेजेगा ये अभी स्पष्ट नहीं है जिसको लेकर कर्मचारियों का समूह खासा परेशान है. जानकारी के अनुसार जिन कर्मचारियों के खिलाफ लगातार शिकायतें मिल रहीं थीं उन्हीं को अभी हटाया गया है और आगे भी ऐसे ही कर्मचारियों को हटाया जाएगा.

कितने खोखले हैं देश की प्रगति के दावे

प्रचारतंत्र की आड़ में कमजोरियों और न्यूनताओं को कब तक छुपाया जाता रहेगा? हमारी दशक भर की प्रगति को अभूतपूर्व बताने की कोशिश की जाती है जबकि जमीनी हकीकत सत्ताधीशों को आईना दिखा देती है. देश की अर्थव्यवस्था कुछ वर्षों में विश्व में चौथे स्थान पर पहुंचने का स्वप्न दिखाया जाता था, लेकिन वह छठें क्रमांक पर आ गई. देश पर 200 लाख करोड़ रुपए कर्ज का बोझ है. डॉलर के मुकाबले रुपया दम तोड़ रहा है. एक दशक में 25 लाख लोगों को गरीबी के दलदल से बाहर निकालने का दावा किया जाता है. यदि इतनी समृद्धि है, तो 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज देने की मजबूरी क्यों आ पड़ी? मूलभूत सुविधाओं के अभाव में एक दशक में 1 लाख से ज्यादा स्कूलें बंद हो गईं. शिक्षा तंत्र व प्रतियोगी परीक्षाओं में खोखलापन आ गया है. जनकल्याण को पीछे छोड़कर सारा ध्यान राजनीतिक उखाड़-पछाड़, पार्टियों को तोड़ने और चुनाव जीतकर सत्ता का विस्तार करने पर लगा है.

जनता सिर्फ इस बात से खुश हो जाए कि प्रधानमंत्री खुद को प्रधानसेवक और अपने निवास को सेवातीर्थ कहते हैं. राजपथ को कर्तव्यपथ का नाम दे दिया गया है. ऐसे ही विभिन्न शहरों व जिलों के नाम बदलकर लोगों को मानसिक तौर पर बहलाया जा रहा है. बेघरों को 4 करोड़ मकान, 12 करोड़ लोगों को नल का पानी, 60 करोड़ लोगों के लिए शौचालय, 44 करोड़ लोगों के लिए 5 लाख रुपए का बीमा, 3 करोड़ से ज्यादा महिलाओं को लखपति दीदी जैसे आंकड़े देकर अपनी कर्मठता बताई जा रही है, लेकिन यह आंकड़े किस सर्वेक्षण के आधार पर हैं, इसका जिक्र नहीं है. बेरोजगारी चरम पर है. अर्थतंत्र की विफलता व कमरतोड़ महंगाई के लिए अंतरराष्ट्रीय स्थितियों और ईरान-अमेरिका युद्ध को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है. मीडिया की आजादी की यह हालत है कि 180 देशों की सूची में भारत 159 वें स्थान पर है. ध्यान देना होगा कि जन असंतोष के उबाल का प्रेशरकुकर कहीं फूट न जाए !

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

चुनाव आयोग बना कठपुतली आयुक्त बन जाते चीफ सेक्रेटरी

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, सफलता की सीढ़ी पर चढ़ना हो तो किसी के हो जाओ या किसी को अपना बना लो!' आपने गीत सुना होगा- 'किसी ने अपना बना के मुझको मुस्कुराना सिखा दिया!' कुछ राज्यों के चुनाव आयुक्तों की शानदार सक्सेस स्टोरी आपके सामने है. पहले उन्होंने राज्य में चुनाव करवाए और नई सरकार आते ही उसमें चीफ सेक्रेटरी या मुख्य सचिव बन बैठे. इस तरह राज्य की पूरी प्रशासनिक मशीनरी के मुखिया हो गए. इसे कहते हैं कर्मफल. बीज बोया, खाद-पानी दिया और फिर फल भी चखा.'

हमने कहा, 'लगता है, आप बंगाल और केरलम की बात कह रहे हैं. बंगाल में बीजेपी को जिताने में राज्य के चुनाव आयुक्त मनोजकुमार अग्रवाल की मुख्य भूमिका रही. जिस प्रकार नाई बालों को कतरता और छोटा करता है, वैसे ही उन्होंने बंगाल की बेढब मतदाता सूची से 92 लाख वोटर के नाम काट दिए. एसआईआर से सारी कसर निकाल दी. इससे शुभेंदु सरकार के लिए शुभ घड़ी आई और बीजेपी के विजयरथ ने ममता की टीएमसी को रौंद डाला. इतना बड़ा सहयोग देने का चुनाव आयुक्त को पुरस्कार मिला. भगवा की सेवा करने पर उन्हें राज्य के चीफ सेक्रेटरी का ओहदा मिल गया.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, चाहे बीजेपी हो या कांग्रेस दोनों ही एक जैसा काम करती हैं. केरलम में भी राज्य के चुनाव आयुक्त रथन केलकर को कांग्रेस नेतृत्व की यूडीएफ सरकार ने चीफ सेक्रेटरी बना दिया. यह भी इनाम ही है. एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप करने वाली पार्टियों बीजेपी और कांग्रेस की करनी एक जैसी है.'

हमने कहा, 'हमारा चुनाव आयोग टी. एन. शेषन के चीफ इलेक्शन कमिश्नर रहते हुए बेहद पावरफुल हो गया था. स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए शेषन की ख्याति थी. वह बिना किसी दबाव या प्रलोभन में आए फ्री एंड फेयर इलेक्शन करवाते थे. बाद में सरकार ने शेषन के पर कतरने के लिए चुनाव आयोग को त्रिसदस्यीय बना दिया था.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इस समय स्थिति अलग है. विपक्षी पार्टियां मानती हैं कि चुनाव आयोग सरकार की कठपुतली बन गया है. चुनाव आयुक्तों को इलेक्शन के बाद चीफ सेक्रेटरी बना देने को मिलीभगत माना जा रहा है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12272

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4		■	5	6
7				■	8		
9			■	10		■	
■	■	■	11			■	■
12	13			■		14	15
16		■	17	18		■	
19		■	20		■	21	
22			■	23			■

बाएं से दाएं
1. सोम और बुध के बीच का वार 5. बूंद, शून्य, अनुस्वार का चिन्ह 7. रत्न, मणि 8. कारण, हेतु 9. सिंचाई या यातायात के लिए किसी नदी या जलाशय से निकाला गया जलमार्ग 10. बिना पका, जो आंच पर न पका हो 11. तांबे-पीतल के बर्तनों पर किया जाने वाला रांगे का मुलम्मा, ऊपरी चमक-दमक 12. नाव का एक अंग जो पीछे की ओर होता है और इसी के द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है 14. अप्रसन्न, क्रुद्ध 16. क्रोध, गुस्सा 17. तूफान की तरह का, प्रचंड 19. हाल का, वर्तमान काल का 20. निश्चित ठहराया हुआ, पूरा किया हुआ 21. भूमि पर उगने वाला तृण जिसे पशु चरते हैं 22. बुद्धि, अक्ल 23. भोज का निमंत्रण, बुलावा

ऊपर से नीचे
1. दांत साफ करने का चूर्ण या बुकनी 2. साक्षी 3. हिलोर, तरंग 4. सप्ताह का दिन, आघात 5. अक्स, छाया, प्रतिबिंब 6. कृश, अशक्त 8, सत्यता, सच्चा होने का भाव 10. अवयव, पेंच-पुर्जा, आने वाला या बीता हुआ दिन 11. निंद्य-कर्म, काम 12. हंसी-मजाक, दिल्लगी 13. प्रणाम, सलाम, किसी बात की मान्यता 15. कंदील, मोमबती जलाने का गिलास, छत में लटकाने के झाड़ 18. लाभ, नफा, हित 21. प्रहार, छल

Solution 12271

रा	धा	कृ	ष्ण	न	■	न	भ
ठौ	र	■	■	■	सा	द	गी
र	■	ख	ल	ब	ली	■	र
■	ब	र	क	त	■	सा	थ
ह	ड़	ब	ड़ी	■	म	नु	■
■	ब	■	■	ब	ह	ना	पा
त	ड़ा	त	ड़	■	■	खि	य
म	ना	ना	■	आ	ज	क	ल

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्र से भेंटवार्ता होगी. आर्थिक सहयोग मिलेगा. शिक्षा के क्षेत्र में अचानक यात्रा होगी. वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यो में मन नहीं लगेगा. व्यापार व्यवसाय में व्यर्थ भागदौड़ एवं व्यय में वृद्धि होगी. मित्र के कारण तनाव रहेगा. वर्ष के अन्त में प्रतिष्ठा एवं यश में वृद्धि होगी. घरेलू कार्यो में व्यस्तता रहेगी.खर्च पर नियंत्रण रखें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होने का योग है. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का मान सम्मान बढेगा. शिक्षा के क्षेत्र में वृद्धि होगी.मान सम्मान बढेगा. पारिवारिक जीवन सुखमय बना रहेगा.यात्रा का योग है.सिंह राशि के व्यक्तियों को शत्रु षड़यंत्र से सतर्कता बांछनीय. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को परिश्रम करना होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को संयम से कार्य करना हितकर रहेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का बचपन की मित्रता का लाभ प्राप्त होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को संतोष होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक परोपकारी स्वाभाव का होगा, परिश्रमी लगनशील उत्साही और निष्ठावान होगा, पिता के साथ बैचारिक मतभेद हो सकते है, किन्तु बाद में उनके प्रति झुकाव रहेगा, कृषि, मकान, वाहन, आदि का सुख रहेगा, कृषि क्षेत्र में उन्नति होगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

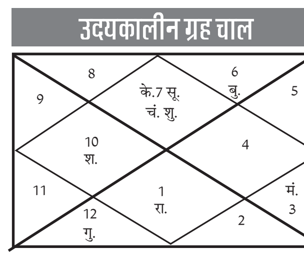

पंचांग

रा.मि. 08 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी भृगुवासरे दिन 9/38, स्वाती नक्षत्रे दिन 10/55, परिघ योगे रात 4/43, बालव करणे सू.उ. 5/17, सू.अ. 6/43, चन्द्रचार तुला, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को स्वाती नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, के भाव में 30 से 40 रूपये की तेजी होने की संभावना है, धान्यों के भाव में स्थिरता रहेगी, रूई, सूत, कपास, वस्त्र, जूट, पाट, बारदाना, के भाव में मंदी होगी, गुड़ खांड़ में तेजी होगी, भाग्यांक 3421 है.

मेष- नाराज चल रहे लोगों को मनाना मुश्किल होगा, दिखावे के कारण खर्च अधिक होगा, पूज्य व्यक्ति के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, भ्रमण मनोरंजन का योग है.

वृषभ- किसी की सिफारिश से रूका कार्य पूरा होगा, ऐसा कार्य बनेगा, जिससे निजी सुख में वृद्धि होगी, यश मिलेगा. उठाईगीरों से सावधानी रखें.

मिथुन- सामाजिक जीवन में मान सम्मान बढ़ेगा, कामकाज को लेकर व्यस्त रहेंगे, संतान संबंधी सुखद समाचार की प्राप्ति होगी, यात्रा,देशाटन वाहन सुख प्राप्त होगा.

कर्क- जोखिम के कार्यो से बचें, पारिवारिक आयोजन से प्रसन्नता होगी, पदोन्नति में सुख का अनुभव होगा, उलझनों के साथ सफ्लता मिलने का योग है.

सिंह- अपूर्ण समाचारों पर लिये गये फैसले बदलना पडेंगे, भौतिक सुख सुविधा पर खर्च संभव है, मांगलिक कार्यो में सफ्लता मिलेगी.

कन्या- धीमी शुरूआत के बाद भी कार्यक्षेत्र में अच्छी सफ्लता मिलेगी, मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, संतोष बना रहेगा.

तुला- नये मकान पर विचार होगा, किसी का सहयोग लाभदायक रहेगा, आर्थिक क्षेत्र में उननति होगी, किसी अभिन्न मित्र से भेंटवार्ता करनी पड़ेगी.

वृश्चिक- निजी कार्यो को टालने से समस्या बढ़ सकती है,आयोजन पर विचार विमर्श होगा, खानपान की अनियमितता रहेगी, स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

धनु- युवाओं को अच्छी सफ्लता के योग हैं, कार्यक्षेत्र में परेशानी हो सकती है, संतान के कार्यो में व्यय होगा, आर्थिक मामलों में सावधानी बांछनीय.

मकर- नई जिम्मेदारी से आप परेशान हो सकते हैं, विवाद से बचना चाहिये, पारिवारिक सुख एवं सहयोग में वृद्धि होगी, मांगलिक कार्य बनेगा.

कुम्भ- रूकी योजनायें फिर शुरू हो सकती हैं, सामाजिक प्रतिष्ठा बनी रहेगी, ऐसा कोई कार्य न करें, जिससे आपके मान सम्मान में कमी हो.

मीन- वैवाहिक चर्चाओं में सफ्लता मिलेगी, मित्रों की कहासुनी का मलाल रहेगा, दायित्वों की पूर्ति होगी, व्यवसायिक क्षेत्र में लाभ होगा.

SUDOKU 7404

	9				6			
	1					2		
5			7				3	
			4					6
		3				9		
4					8			
	7				9			8
		2					1	
			3				4	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7403

6	5	8	9	1	4	2	7	3
1	2	7	3	5	8	6	4	9
3	4	9	7	2	6	1	5	8
2	3	6	1	4	5	9	8	7
8	9	5	2	7	3	4	1	6
4	7	1	6	8	9	3	2	5
7	6	4	5	3	1	8	9	2
9	8	2	4	6	7	5	3	1
5	1	3	8	9	2	7	6	4